26 जुलाई 2022

‘गीता विज्ञान उपनिषद’ के विमोचन केअवसर पर माननीय लोकसभा अध्यक्ष का सम्बोधन

(ली मेरेडियन, जनपथ, नई दिल्ली)

मुझे खुशी है कि राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान संपादक माननीय गुलाब जी कोठारी के लिखे ग्रंथ ‘गीता विज्ञान उपनिषद’ का विमोचन आज देश के प्रधान न्यायाधीश माननीय एन.वी. रमणा साहब के करकमलों से हो रहा है जो स्वयं विधि के विद्वान तो हैं ही, वे अध्यात्म और गीता के मर्मज्ञ भी हैं।इस मौके पर मैं गुलाब जी और समस्त पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई देता हूं।

वेद विज्ञान को जनसाधारण के सामने सरल भाषा में लाने का जो प्रयास पत्रिका के संस्थापक श्रद्धेय कर्पूर चन्द्र कुलिश जी ने शुरू किया था, उसे आगे बढ़ाने का काम गुलाब कोठारी जी कर रहे हैं।

आज जिस ग्रंथ का विमोचन हुआ है, वह सनातन संस्कृति की कालजयी रचना गीता के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। सही मायने में इस ग्रंथ में गीता एवं वेद विज्ञान का सरल शब्दों में जिस तरह से विवेचन किया गया है, उससे यह उम्मीद की जानी चाहिए कि नई पीढ़ी हमारे पुरातन ज्ञान को आसानी से समझ सकेगी।

वैसे तो वेदों के गूढ़ रहस्यों को समझना कोई आसान काम नहीं है। राजस्थान पत्रिका के माध्यम से गुलाब जी लगातार वेदों के विज्ञान भाव को अपने आलेखों के जरिए समझाने का भागीरथी काम करते रहे हैं। वेद विज्ञान के अध्ययन में गुलाब जी कोठारी ने काफी समय दिया है।

वेद विज्ञान अध्ययन एवं शोध संस्थान के माध्यम से कोठारी जी ने न केवल वेद विज्ञान पर शोध को आगे बढ़ाया है, बल्कि संस्कृत की भी अनूठी सेवा की है।

गीता विज्ञान उपनिषद भी इन्हीं प्रयासों की कड़ी है। कोठारी जी का संपूर्ण लेखन आधुनिक जीवन मूल्यों के बारे में तो बताता ही है, साथ ही वर्तमान में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों में आ रही कमी के प्रति सचेत करता नजर आता है।

मुझे राजस्थान में कोठारी जी के संवाद सेतु और दिशाबोध कार्यक्रमों में शामिल होने का मौका भी मिला है। वे किस तरह से जनता के बीच जाकर उनकी बात सुनते हैं और अपने अखबार के जरिए उनकी

आवाज बनते हैं, यह सब जानते हैं। दिशा बोध कार्यक्रम के जरिए खास तौर से नई पीढ़ी को हमारी संस्कृति से अवगत कराने के काम को गुलाब जी ने मिशन के रूप में लिया है।

हम सबके लिए गीता एक पवित्र ग्रंथ ही नहीं बल्कि व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाने का आधार सूत्र है। ऐसा इसलिए क्योंकि गीता में कहे गए कृष्ण के एक-एक उपदेश व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन लाने का काम करते हैं।

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने निष्काम कर्मयोग का अमर संदेश दिया है। गीता में फल की इच्छा किए बिना कर्म करने का उपदेश दिया गया है। यह अपने आप में एक पूरा दर्शन है। फल की कामना किए बिना कर्म करने वाला व्यक्ति सहनशील बन जाता है। लेकिन जब हमारी दृष्टि कर्म के बजाए फल पर रहने लगे तब न तो कर्म के प्रति श्रद्धा भाव ही होगा और न ही व्यक्ति धैर्य रख पाएगा। इसलिए बिना फल की इच्छा के ही कर्म की प्रधानता सबसे बलशाली मानी गई है। अर्थात यदि व्यक्ति किसी कार्य में सफलता प्राप्त करना चाहता है तो उसके लिए सबसे अनिवार्य है कि वह अपने कर्म पर सबसे अधिक ध्यान दे।

गीता मानव को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। यह मानव को उसके कार्य करने का सामर्थ्य का बोध कराती है। गीता ज्ञान, भक्ति और कर्म तीनों ही मार्गों से मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को भी प्रशस्त करती है।

यह मानव को अध्यात्म से जोड़ती है। गीता के अनुसार प्रत्येक प्राणी में शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा रूपी चार घटक होते हैं, इन चारों घटकों का समन्वय ही मानव को सत्कर्म की ओर ले जाता है।

संसार की एक सरल व्याख्या गीता में की गई है। जैसे पेड़ के सभी पत्ते, पुष्प, फल बीज से अलग नहीं हैं, पेड़ के सभी अंग उसी बीज से प्रकट हुए हैं और एक दूसरे के लिए जी रहे हैं, ठीक यही क्रम संसार का भी है।

संसार के सारे पिंड जैसे सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी आदि एक दूसरे पर आश्रित हैं और सब मिलकर पूर्ण हैं। सब अपने आप में भी पूर्ण हैं। अस्तित्व और सह अस्तित्व की इससे सुन्दर व्याख्या नहीं हो सकती।

गीता का सार संदेश है कि धर्म और अधर्म के मध्य हमेशा धर्म की विजय होती है। भगवान श्री कृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को संदेश देते हुए कहा था कि जब जब धर्म की हानि होगी, उसकी रक्षा स्वयं ईश्वर करेंगे। यह मानव को साफ संदेश देता है कि भगवान नैतिकता, सत्य और धर्म के पक्ष में खड़े हैं तथा अधर्म और बुराई का पराभव निश्चित है।

गीता में भक्ति, ज्ञान और कर्म से जुड़ी कई ऐसे बातें बताई गई है जो मनुष्य के लिए हर युग में महत्वपूर्ण हैं। गीता की महानता यह है कि इसके प्रत्येक शब्द पर एक अलग ग्रंथ लिखा जा सकता है। गीता का मुख्य ज्ञान मानव को श्रेष्ठ बनाना, ईश्वर को समझना और मोक्ष की प्राप्ति है।

इसीलिए जब भी हम गीता और वेदों का नाम सुनते हैं तो हमारे दिल-दिमाग में धर्मग्रंथों का ऐसा रूप सामने आ जाता है जिनके जरिए व्यक्ति के चरित्र निर्माण का काम होता है।

अपनी संस्कृति और परंपरा को बनाए रखना किसी भी समाज का मूल दायित्व होता है। हम इतिहास में देखते हैं कि एक लम्बे काल खण्ड तक विदेशी आक्रांताओं ने हमारी संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया था। लेकिन हमारे पूर्वजों ने हमारी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखा। हमारे संतों व ऋषि मुनियों ने श्रुति परम्परा के जरिए हमारे वेदों में छिपे गूढ़ ज्ञान को जीवित रखा और हमारी सनातन संस्कृति को समय के साथ अधिक समृद्ध किया।

साथियों, आज आधुनिकता का दौर है। धर्म के विश्वासों और विज्ञान के तर्कों के मध्य कई बार टकराव होता है। लेकिन हमें यह समझना होगा कि विज्ञान और धर्म एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों को एक साथ समझे बिना न तो विज्ञान परिपूर्ण है, न ही धर्म। इसीलिए आज के माहौल में धर्म एवं विज्ञान को नई परिभाषा देने का वक्त आ गया है।

विज्ञान के विकास के मामले में पश्चिम ने भले ही बहुत तरक्की कर ली हो, लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में वहां जीवन भटकाव और तनाव से मुक्त नहीं हो पाया है। वहीं हमारे वेद विज्ञान ने मानव को अपने मन की शांति के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व का कल्याण करने की दिशा में प्रेरित किया है। समस्त विश्व के लोग हमारी इस विचारधारा की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

आज हमारे समाज में जो धर्म-समुदाय को लेकर राजनीति हो रही है, उसकी चिंता से भी मैं आप सबको जोड़ना चाहूंगा। कोई भी धर्म, कोई भी संप्रदाय हिंसा की हिमायत नहीं करता, लोगों को बांटने की बात नहीं करता। इसलिए आज आवश्यकता है कि हम देश को जोड़ने की बात करें, समाज में सद्भाव और सौहार्द स्थापित करने की बात करें। तभी हमारा देश और समाज विश्व के सामने एक आदर्श प्रस्तुत कर सकता है।

इस परिप्रेक्ष्य में विशेष रूप से हमारे प्रबुद्ध जनों की जिम्मेदारी बनती है कि वे युवा पीढ़ी को हमारे वैदिक ग्रंथोंमें निहित ज्ञान को सरल भाषा में बताने का काम करे। हमारी संस्कृति और धर्म ग्रंथों की सरल व्याख्या संसार के सामने प्रस्तुत करें।

साथियों, श्री गुलाब कोठारी जी का रचना संसार काफी व्यापक है। जीवन दर्शन से जुड़ा कोई भी पहलू ऐसा नहीं, जिस पर आपने अपने विचार व्यक्त नहीं किए हों। आपने निरंतर वैदिक विषयों की वैज्ञानिक व्याख्या में अपना जीवन समर्पित किया है तथा समाज के अंदर हमारी सनातन संस्कृति के अनमोल खजाने को सामने लाने का काम किया है।

आपकी लेखनी लगातार समाज को सन्मार्ग दिखाती रहे, व नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करती रहे, यही कामना करता हूं।

जय हिन्द।